–: परमात्मना अरिहन्तः बुद्ध चालीसा :–

इस ग्रन्थ का 40 दिनों तक लगातार मनन करने से पाठक सिद्ध अवस्था को प्राप्त करता है ऐसा बुद्धजनों का, सत्य को पाऐं हुए संतो का मत है। और उस अवस्था का नाम है

बुद्धत्तव, जागरण, प्रज्ञा, बोध, प्रबुद्ध, ज्ञान !

जिस किसी ने भी इस ग्रन्थ का पाठ किया, जीवन में इसे धारण किया तथा समाज में इसका वितरण किया उन सभी के मन मे स्वत: ही करुणा का उदय हो गया। आप सभी से अनुरोध है कि नित्य प्रात: इस ग्रन्थ का पाठ करें तथा औरों को भी इस ग्रन्थ को पढनें में सहयोग करें।

योद्धाः – धर्म क्या है?

भगवान - केवल तुम्हारे हृदय में संसार मात्र के लिए प्रेम।

योद्धाः – क्या हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन होना धर्म नही होता?

भगवान - अगर यही धर्म होता तो बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर क्या खोज रहें थें? जन्म से धर्म नही मिलता। धर्म ठोकरें खाकर पैदा करना पड़ता है।

योद्धाः – तो धर्म कैसा होना चाहिए?

भगवान - जीता जागता! जो तुम्हें आज सुखी करे न कि मरने के बाद स्वर्ग पहुचाएं। क्योंकि मरने के बाद की कल्पना ही पाखण्डवाद है।

योद्धाः – क्या धर्म जन्म से होता है?

भगवान - नही! जन्म से ही तुम्हारी आंखो पर धर्म की अंध विश्वास रुपी पट्टी बांध दी जाती है। लेकिन कोई-कोई विरला, पागल, दिवाना, मस्ताना गलती से अपनी आंखो पर से पट्टी उतार देता है। और वो ही गलती से धार्मिक हो पाता है।

योद्धाः – सत्य क्या है?

भगवान - तुम्हारा होना ही सत्य है और बाकि सभी असत्य।

योद्धाः – आत्मज्ञान क्या है?

भगवान - स्वयं को पहचानना।

योद्धाः – बुद्धत्व किसे कहते है?

भगवान - आँखों का खुल जाना। और इसका बौद्ध धर्म से अन्य किसी भी धर्म से कुछ भी लेना-देना नही है।

योद्धाः – आत्म अनुभूति कैसे होती है?

भगवान - मैं के मरने के बाद, अहंकार के तिरोहित होने के बाद। लेकिन ध्यान से अपनी मैं को मारना! क्योंकि मुर्दा बोला नही करते।

योद्धाः – भीतर के दीपक से क्या तात्पर्य है? वो कैसे जलता है?

भगवान - भीतर के दीपक से तात्पर्य होता है स्वयं का ज्ञान। और यह तब प्रकट होता है जब तुम यह मान लेते हो कि तुम अज्ञानता में हो, अंधकार में हो।

योद्धाः – हम कहाँ से आते है और कहाँ जाते है?

भगवान - एक दीपक जलाओं और ध्यान से देखो कि ज्योति कहाँ से आती है और अब इस दीपक को बुझाओं और देखो कि ज्योति कहाँ जाती है।

योद्धाः – धर्म की खोज में मनुष्य सफल क्यों नही हो पाया?

भगवान - क्योंकि वह धारणाएं बनाकर धर्म को खोजने चल दिया। धर्म भीतर से उपजता है बाहर से नही मिलता।

योद्धाः – धर्म की खोज से क्या लाभ होता है?

भगवान - कुछ भी नही! बस तुम शांत होकर बैठ जाते हो और सारी दौड़े समाप्त हो जाती है।

योद्धाः – परमात्मा के दर्शन करने के लिए क्या करे ?

भगवान - केवल अपनी आँखें साफ करो। तो पाओगे कि वही खुदा तुम्हारे चारो तरफ नाच रहा है।

योद्धाः – बुद्धत्व कैसे प्राप्त होता है?

भगवान - किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ लो जो मर चुका हो। और उससे तुम भी मरने की विधि समझ लो और तुम भी मिट जाओ।

योद्धाः – जीवन क्या है?

भगवान - तुम्हारे लिए तो भार, दु:ख, नरक और बुद्धों के लिए स्वर्ग, उत्सव, आनंद।

योद्धाः – आत्मा का आकार कैसा है और यह माँ के गर्भ में कब प्रवेश करती है?

भगवान - विराट! और आत्मा कही भी आती जाती नही तो प्रवेश करने और निकलने का मतलब ही नही।

योद्धाः – परम जीवन क्या होता है और कैसे पाया जाता है?

भगवान - जिस दिन तुम मरोगे उसी दिन तुम परम जीवन को प्राप्त करोगे। लेकिन मैं तुम्हारी देह के मरने की बात नही कर रहा हूँ। मैं तुम्हारे मैं रुपी अहंकार के मरने की बात कर रहा हूँ।

योद्धाः – ईश्वर है या नहीं?

भगवान - ये प्रश्न ही तुम्हे उन मूढ़ो ने सिखाया है जिन्होंने झूठे ईश्वर गढ़े है। मुझसे तो ये पूछो कि क्या मैं ईश्वर हो सकता हूँ?

योद्धाः – ध्यान क्या है?

भगवान - तुम्हारे विचार मुक्त होने की कला। तुम्हारे अन्नत ब्रह्माण्ड़ में उड़ने की कला।

योद्धाः – हम अध्यात्म में ऊपर कैसे उठे?

भगवान - पंख लगाकर। और पंख तो तुम लेकर ही पैदा हुए हो। मैं तो तुम्हे पंख फडफड़ाना ही सीखाता हूँ फिर उड़ तो तुम स्वयम् ही सकते हो।

योद्धाः – तुम्हारा मार्ग क्या बुद्ध या गीता का मार्ग है?

भगवान - नही। मेरा मार्ग तो मेरा मार्ग है वह न तो बुद्ध का मार्ग है और न ही महावीर का, न हिन्दू का, न मुस्लिम का, न सिख का, न ईसाई का। "केवल देखो मेरी मस्ती को और जियो मेरी तरह"।

योद्धाः – विराट कैसा दिखता है?

भगवान - आंखें बंद करो और देख लो मेरी विराटता। बस बिलकुल ऐसा ही दिखता है विराट।

योद्धाः – मुक्त कौन है?

भगवान - वो जो सारे बन्धन तोड़ सके और इसमें तुम्हारे धर्म के बन्धन भी आते है।

योद्धाः – बिना भगवान के कैसा धर्म ?

भगवान - धार्मिक होने के लिए भगवान की जरुरत नहीं बल्कि तुम्हारे भक्त होने की जरूरत है।

योद्धाः - ईश्वर, परमात्मा, खुदा, अल्लाह होता है क्या?

भगवान - हाँ ! और यह सभी तुम्हारें ही जीवन के प्रर्यायवाची नाम है। यानी तुम्हारा ही दूसरा नाम अल्लाह है।

योद्धाः - अब भविष्य में करोड़ों दीपक जलेगे इसका क्या मतलब है?

भगवान - जब भी कोई एक बुद्ध होता है तो वो घोषणा है कि अब लाखों करोड़ो बुद्ध होगे।

योद्धाः - हमारे जीवन में वो घटना कब घटेगी ?

भगवान - वो सुबह कभी तो आएगी जब तुम भी झूम के नाचोगे, तुम्हारी आत्मा कभी तो जागेगी। "जो मैं कल था वो तुम आज हो और जो मैं आज हूँ वो तुम कल होगे"।

योद्धाः - क्या धर्म जन्मगत होता है?

भगवान - नही! धर्म जन्मगत नही व्यक्तिगत होता है।

योद्धाः - आनंद, सुख कहां और कैसे मिलता है?

भगवान - आनंद, सुख तो आज भी बरस रहा है केवल तुम बस वहा नही हो। तुम खोएं हो जप-तप कर, नमाज पढ़ भविष्य में सुखी होने की कल्पना लिए।

योद्धाः - कौन सा शास्त्र ठीक है ?

भगवान - सत्य, विराट, परमात्मा, खुदा, बोध, शास्त्रों से नही शास्त्रा से मिलता है।

योद्धाः - इस लोक से उस लोक जाने के लिए कौन सा सेतु है ?

भगवान - किसी जिन्दा बुद्ध के सिर के ऊपर पाँव रखकर ही तुम उस पार जा सकोगे।

योद्धाः - समाधी का अनुभव कहा होता है ?

भगवान - जहाँ तुम्हारी मैं गिरती है।

योद्धाः - सत्य का साक्षात्कार करने की सही और छोटी विधि क्या है ?

भगवान - दोनो में से एक को मिटा दो या "तू को या मैं को"। उसी समय सत्य का साक्षात्कार हो जायेगा। "खुद को मारो और अपने खुदा को पैदा करो"।

योद्धाः - मोक्ष कैसे मिलेगा?

भगवान - अगर तुम इन मूर्खता भरे धर्मो को ही छोड़ दो तो तुम आज ही मोक्ष में हो। बुद्धि के बंधनो से मुक्त व्यक्ति को मोक्ष मिलता है लेकिन जीते जी।

योद्धाः - आत्मा का स्वरुप क्या है?

भगवान - आत्मा एक ऊर्जा स्वरुप है जो सम्पूर्ण अस्तित्व में फैली है। उसे अलग वस्तु मानना मूढ़ों ने तुम्हें सिखा दिया है।

योद्धाः - जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई?

भगवान - ऊर्जा एक जीवित शक्ति है और उसी जीवित शक्ति ने जीवन को पैदा किया।

योद्धाः - आत्मज्ञान क्या है?

भगवान - केवल स्वयं को पहचानना, यानी स्वयं का साक्षात्कार।

योद्धाः - क्या मरने के बाद आत्मा मुक्त होती है?

भगवान - ऊर्जा को कोई बन्धन ही नही है तो मुक्त काहे को करनी। अगर बिजली की तारों से कहीं आग लग जाए तो क्या बिजली दूषित होगी?

योद्धाः - क्या आत्मा जन्म के समय में आती है तथा मृत्यु के समय में चली जाती है?

भगवान - समुंद्र में मटका डालकर दाऐं-बाऐं चलाकर देखों कि मटका ही चलता है या समुंद्र भी दाऐं-बाऐं चलता है।

योद्धाः -योग क्या है?

भगवान - एक योग होता है आध्यात्मिक! जिसका तात्पर्य है तुमसे मिलना। और एक योग होता है संसारिक। जिसका तात्पर्य केवल शारीरिक कसरत करना है।

योद्धाः - मोक्ष क्या होता है?

भगवान - वो स्थिति जिसमें मैं आज जी रहा हूँ।

योद्धाः - निर्वाण की प्राप्ति कैसे होती है और यह क्या है?

भगवान - निर्वाण कोई मरने के बाद होने वाली उपलब्धि नही होती। तुम्हारा आज में उपस्थित होने का नाम ही निर्वाण है। और तुम्हारा भूत-भविष्य में होने का नाम ही बंधन है।

योद्धाः - मुक्ति प्राप्त करने के साधन और विधिया क्या है ?

भगवान -मुक्ति प्राप्त करने की विधि या साधन कोई नही होते। हाँ! बंधन में बंधने की विधि या साधन जरुर होते है। जैसे स्वास्थ्य प्राप्त करने की कोई भी औषधि नही होती। हाँ! बीमारी हटाने की औषधि जरुर होती है। और जब औषधि खा ली जाती है बीमारी ठीक हो जाती है तो जो बचता है उसी का नाम स्वास्थ्य है।

योद्धाः - ब्राहम्ण का क्या तात्पर्य है?

भगवान - ब्राह्मण बना है ब्रह्म धातू से। यानि जिसने ब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया, जिसने ब्रह्म का अनुभव कर लिया, जिसने ब्रह्म को जान लिया और जो स्वयं ब्रह्म हो गया हो। वो ही ब्राह्मण।

योद्धाः - ब्राहम्ण ब्रहमा के मुख से और शूद्र जंघा से पैदा क्यों हुए? और यह अवधारणा किसने और क्यों रची?

भगवान -ये कहानियाँ उन लोगों ने रची जिन्हें कुछ भी ज्ञान नही था। हम सभी एक ही ज्योति से पैदा हुए है। सिख धर्म में नानक की पंक्ति है। "एक नूर से सब जग उपजा कौन भले कौन मन्दे"!

योद्धाः - ब्राहम्ण कौन है?

भगवान - ब्राह्मण यानी जो सभी में ब्रह्म को देखे।

योद्धाः – पाखंड क्या है?

भगवान - जिसके बारे में तुम्हें पता नही, और वो सभी सोच जो तुमने औरों से ली है उसे सच मान लेना। और उसी पाखंड अनुसार कृत्य कर स्वयं को धार्मिक मानकर धर्म की खोज से चूक जाना।

योद्धाः – क्या पुराने सभी शास्त्र गलत है?

भगवान - जो शास्त्र तुम्हारे जीवन के अनुभव से तुममें उपजेगा बस वही शास्त्र ठीक है। और तुम्हारे संसार में जो हजारों शास्त्र सभी के धर्मो में है वो सभी तुम्हारे लिए गलत है।

योद्धाः – क्या तीर्थ क्षेत्र में रहने से कुद्ध लाभ होता है?

भगवान - केवल अपने भीतर रहने से लाभ होता है।

योद्धाः – क्या राम-कृष्ण इस धरती पर हुए?

भगवान - राम-कृष्ण, बुद्ध-महावीर, नानक-कबीर, मोहम्मद -जीसस आदि महापुरुष इस धरती पर हुए या नही इससे तुम्हें कुछ भी लाभ होने वाला नही है। क्योंकि जब यह रहे तब क्या संसार धार्मिक बन पाया था?

योद्धाः – क्या भारत देव भूमि है?

भगवान - आज से 2000 वर्ष पूर्व आज से कई गुना बड़ा भारत था लेकिन तुम 1947 के बाद तो पाकिस्तान को भी देवभूमि नही मानतें। देव एक गुण है जो बुद्धों के भीतर प्रकट होता है। कोई भी भूमी देव या देवी नहीं होती।

योद्धाः – क्या कभी संसार धार्मिक होगा?

भगवान - नहीं! संसार कभी धार्मिक नही होता। धर्म मनुष्य के भीतर प्रकट होता है। जिस दिन तुम्हें भी स्वयं का साक्षात्कार होगा उस समय तुम्हारे भी भीतर से धर्म की खुशबू महकेगी।

योद्धाः – शंकर का मत है कि ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या! क्या यह पंक्ति ठीक है?

भगवान - नही! सही पंक्ति है। "जगत सत्य ब्रह्म तुम"।

योद्धाः – क्या बड़े भाग्य से मनुष्य जीवन मिलता है?

भगवान - मनुष्य शब्द ही हटा दों। जीवन ही बड़े भाग्य से मिलता है। फिर वो चाहे मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का। इसे जप-तप, नमाज, व्रत, अनुष्ठान में न गवाऐं। दिल खोलकर प्रेम पूर्वक इसे जीऐं और औरों को भी जीने दें।

योद्धाः – क्या जीवन दुःख है?

भगवान - बुद्धूओं के लिए तो हाँ! और प्रबुद्ध के लिए यही जीवन सुख है, उत्सव है, आन्नद है।

योद्धाः – मुक्त कैसे होगें?

भगवान - सारी पुरानी रुढ़िवादी विचारधाराओं को छोड़कर। लेकिन जीते जी। मरने के बाद कोई किसी भी प्रकार की मुक्ति या बंधन का प्रश्न नही होता।

योद्धाः – धर्म या मनुष्य दोनों में से क्या आवश्यक है?

भगवान - किसी भी प्रकार का जीवन। चाहें मनुष्य का हो या पशु-पक्षी का।

योद्धाः – खुदा को कहाँ ढूंढे?

भगवान - तुम काबा जाओं या काशी ! खुदा को कही न पाओगें। क्योंकि तुम्हारी आंखे ही बंद है। अल्लाह तुम्हारें सामने खुला बिखरा पड़ा है। ब्रह्म नदी-नालों में चारों तरफ बिखरा पड़ा है। तुम्हें देखना ही नही आता। रुढ़िवादी परम्पराओं की पट्टी खोलो अल्लाह सड़कों पर बिखरा दिखेगा।

योद्धाः - क्या मृत्यु के समय 1000 बिच्छू के डंक की सी पीड़ा होती है?

भगवान - नही! यह वचन किसी नासमझ व्यक्ति के हैं। मरते वक्त व्यक्ति को केवल एक ही दु:ख होता है कि हाय! कितना सुन्दर जीवन मिला था और मैं जीने से ही चूक गया।

योद्धाः - ध्यान क्या है?

भगवान - मन की निर्विचार अवस्था की दशा और तुम्हारा न हो जाना।

योद्धाः - जागरण क्या है?

भगवान - स्वयं को पहचान जाना, सत्य को जान लेना।

योद्धाः - बुद्धत्व क्या है?

भगवान - तुम्हारें मन में से भविष्य की कल्पनाओं का मिट जाना और आज के प्रति प्रेम का जन्म होना, तथा संसार मात्र के प्रति करुणा का उदय होना।

योद्धाः - सत्य का साक्षात्कार करने की विधि क्या है?

भगवान - दोनों में से एक को मिटा दो "या तू को या मैं को"।

योद्धाः - मोक्ष कैसे मिलेगा?

भगवान - अगर तुम सभी प्रकार की धार्मिक मूढ़ता भरी सोच छोड़ दो तो जीते जी ही मोक्ष पा जाओगें।

योद्धाः - आस्तिक होना अच्छा है या नास्तिक होना?

भगवान - यकीनन आस्तिक होना ही अच्छा है लेकिन जिनको आजतक तुमने आस्तिक माना है उस प्रकार का मत समझना। वो तो नास्तिक से भी निचली स्थिति के व्यक्ति है। आस्तिक माने वो व्यक्ति जो यह धारणा रखे कि जीवन ने जैसा उसे बनाया वो पूर्णत्या ठीक है। अगर वो मन्दिर-मस्जिद जाकर आरती पूजा कर कुछ बदलवाना चाहता है तो वो नास्तिक है।

योद्धाः - धार्मिक कौन और अधार्मिक कौन?

भगवान - जो संसार मात्र से प्रेम करे वो धार्मिक। और जिसकी सोच मन्दिर-मस्जिद में अटक जाए वो अधार्मिक। लेकिन तुम तो आजतक बिलकुल ही उल्टा मानते आए हों।

योद्धाः - आस्तिक कौन और नास्तिक कौन?

भगवान - जो प्रकृति के चलन को स्वीकारे वो आस्तिक और जो मन्दिर-मस्जिद में जाकर दीया, प्रसाद, मोमबत्ती, अगरबत्ती जलाकर सभी कुछ बदलवाने की इच्छा रखें वो नास्तिक।

योद्धाः - हम कैसे माने कि मनुष्य स्वयम् में ही सारा ज्ञान धारण किए हुए है?

भगवान - बत्तख के बच्चें को तैरना सिखाना नही पड़ता। तुम तो फिर भी आदमी के बच्चें हो। जल में पैदा हुई मछलियों को गंगा स्नान के लिए कही नही जाना पड़ता।

योद्धाः - मनुष्य अपने ही बंधन क्यों नही खोल पाता?

भगवान - यदि मनुष्य स्वयं का एक बार भी दर्शन कर ले तो सारे बंधन क्षण मात्र मे उतार कर फेंक देगा। लेकिन दूसरों की ओर देखने की आदत के कारण वह स्वयं को कभी भी देख नही पाता। और अज्ञान वश बंधन में ही जीवन व्यतीत कर मर जाता है।

योद्धाः - जब यहा धर्मशाला की ही भांति आना-जाना है तो यहा कुद्ध भी कार्य क्यूं करना? ऐसा संतो ने कहा है?

भगवान - यही दुर्भाग्य है इस देश का! कि लोग कुछ और कह गए और तुमने समझ कुछ और लिया। वो कह गए कि लालच मत करो और तुमने मान लिया कि कुछ काम ही मत करो, संसार को सजाओं ही मत। क्योंकि यहां से तो चले जाना है।

योद्धाः - परमात्मा को, खुदा को कैसे जाना जा सकता है?

भगवान - केवल स्वयं को जानकर। और जिसने स्वयं को जान लिया उसने उस विराट को भी पहचान लिया।

योद्धाः - क्या धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सन्यास लेकर पत्नी बच्चें छोड़कर जंगल जाना ठीक नही है?

भगवान - केवल छोड़नें वाले को छोड़ना ही सन्यास है और बाकी सभी कृत्य पाखंड है। और संसार में से अपनी जिम्मेदारी छोड़कर जंगल भागना कोरी मूर्खता है। जो-जो मूर्खताएं धर्म के नाम पर तुम सभी ने संजोई है मैं उसी को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

योद्धाः - क्या अपने-अपने धर्मों के अनुसार आचरण करना ठीक नही है?

भगवान - इससे तुम दिखावें के धार्मिक बन जाओगें और इसी प्रकार चलने को पाखंड कहते है। धर्म अपना-अपना नहीं होता। धर्म केवल प्रेम होता है। प्रेम सभी का एक जैसा होता है।

योद्धाः - क्या खुदा, भगवान, अल्लाह की कोई मूरत होती है?

भगवान - हाँ ! दुनिया भर में फैली करोड़ों-अरबों मूरत उसी की है लेकिन जब से तुमने परमात्मा को, खुदा को दूर सातवें आसमान पर बिठा दिया तभी से सब उल्टा हो गया है।

योद्धाः - मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है?

भगवान - केवल जीवन को जीना। और मनुष्य जीवन का ही नही हर जीवन का लक्ष्य है कि प्रेम पूर्वक, हंसी-खुशी जीवन को जीया जाए।

योद्धाः - क्या पुण्य करना ठीक नही है?

भगवान - जो तुम करोगे वो पुण्य हो ही नही सकता। तुम रास्ते से हट जाओं फिर जो होगा वो स्वयम् में पुण्य होगा।

योद्धाः - क्या स्वर्ग-नरक होता है?

भगवान - हाँ ! तुम आज सभी नरक में ही तो रहते हो। तभी तो सभी को मरने के बाद स्वर्ग जाने की लालसा रहती है। किसी को बैकुण्ठ जाना है, किसी को जन्नत। लेकिन बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस आदि ने इसी जंहा को सुंदर बनाकर यही अपना स्वर्ग स्थापित कर दिया। तो बुद्धों के लिए स्वर्ग यही है और तुम्हारें लिए नरक यही है।

योद्धाः - क्या पूजा करना ठीक नही है?

भगवान - तुम अपने माँ-बाप से, पत्नी-बच्चों से संसार में प्रेम करना छोड़कर उनकी पूजा करने लग जाओं। बस एक दिन में पता लग जाएगा कि प्रेम करना ठीक है या पूजा करना।

योद्धाः - क्या जन्म मृत्यु विधि के हाथ है?

भगवान - आँखों पर काली पट्टी बांधकर सड़क पार करके देख लो किसके हाथ है।

योद्धाः - क्या भाग्य पूर्व निंधारित होता है? जिसे ब्रह्मा लिखकर भेजता है?

भगवान - हाँ ! गधों के लिए तो वो लिखकर ही भेजता है कि तुम स्कूल नही जा पाओगें और पूरा जीवन दूसरे का बोझा ही ढ़ोओगें। और मनुष्य के लिए कोई ब्रह्मा नहीं क्योंकि वो स्वयं अपने भाग्य का विधाता है।

योद्धाः - क्या पुराने सारे और सभी धर्मों के शास्त्र गलत है?

भगवान - तुम संसार में आज की जनरेशन के 10 वर्ष के बच्चें को देखों और तुलना करों उस समय के साथ जब तुम 10 वर्ष के थे। अब बताओं आज का 10 वर्ष का बच्चा अक्लमंद या तुम जब 10 वर्ष के थे तब तुम अक्लमंद थे। उत्तर आएगा कि आज का बच्चा ज्यादा अक्लमंद है। अब सोचों हमसे 5000 वर्ष पहले जो हमसे कम बुद्धिमान लोग थे हम उनकी लिखी हुई पुस्तकों को ठीक मान रहे है। आज बच्चा बड़ा हो गया है। अब नए शास्त्र रचने होगें।

योद्धाः - क्या इस जगत में फिर कभी कोई पैगम्बर, अवतार, या परमात्मा का पुत्र आएगा?

भगवान - केवल कुछ नासमझ व्यक्ति ही अपने बारे में ऐसी धारणाएं पालने की कल्पनाएं करते है। आज से पहले भी जो महापुरुष आए उनमे से किसी ने भी ऐसी घोषणा नही की। हाँ ! उनके जाने के बाद उनके अनुयायियों ने उनके बारे में ऐसे ही मूर्खता पूर्ण वक्तव्य दिए।

योद्धाः - क्या हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बौद्ध-जैन होना धार्मिक होना नही होता?

भगवान - अगर ऐसा ही होना धार्मिक होता तो बुद्ध-महावीर जो जगंलो में भटके वो तो बिलकुल सही नही थे। या तो तुम्हारी मान्यताएं ठीक या बुद्ध-महावीर को जो मिला वो ठीक।

योद्धाः - जैसा हम अब तक करते आऐ है कि पैदा हुए बच्चें को ही हिन्दु-मुस्लिम आदि बना देते है क्या वो ठीक नही है?

भगवान - तुम्हारे घर में अब जो बच्चा पैदा हो उसे 25 वर्ष बिना हिन्दू-मुस्लिम, सिख-ईसाई, बौद्ध-जैन बनाए बड़ा करके देख लो। बड़ा होकर वो तुम्हारें जैसे मूढ़ धार्मिको पर हसेगां।

योद्धाः - अगर पवित्र जीवन भी जिया जाए और मन्दिर-मस्जिद भी जाया जाए तो क्या कुछ हानि है?

भगवान - नही! लेकिन पवित्र जीवन जीने के बाद मन्दिर-मस्जिद जाकर करोगें क्या? धर्म युद्ध की तैयारी? या जेहाद की तैयारी?

योद्धाः - हम कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद आदि महापुरुषों की पूजा क्यों करते है?

भगवान - क्योंकि हमारा समाज कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद जैसे महापुरुष दोबारा नही बना पाया। सोचो अगर आज दुनिया में कृष्ण, बुद्ध, नानक, जीसस, मोहम्मद जैसे महापुरुष 100 करोड़ व्यक्ति जिन्दा घूम रहे होते तो क्या हम इन महापुरुषों के मन्दिर बनाते?

योद्धाः - हमें किस मूर्ति की पूजा करनी चाहिए?

भगवान - स्वयं की मूर्ति बनवा लो वही परमात्मा की मूर्ति है और बाकी सभी मूर्तियों को बाहर फेंक दो।

योद्धाः - हमें पाप का भय लगता है कि अगर तुम्हारें कहने पर हम अपना पुराना धर्म, मूर्ति या शास्त्र त्याग दें?

भगवान - अपना सभी पुराना मुझे दे जाओ पापो के साथ। मैं उन सभी पापो को भी मुक्त कर दूंगा।

योद्धाः - हमें पूजा स्थल में किसकी तस्वीर लगानी चाहिए?

भगवान - एक आईना लगवाना चाहिए उसी में परमात्मा की तस्वीर दिख जाएगी।

योद्धाः - क्या दीक्षा लेने से कुछ भी लाभ नही होता?

भगवान - नही! क्योंकि अगर दीक्षा से ही तुम धार्मिक हो सकते तो कृष्ण, बुद्ध, महावीर, मोहम्मद, जीसस, नानक, कबीर सभी तुम्हें दीक्षा देकर धार्मिक बना गए होते।

योद्धाः - जीवन में क्या आवश्यक है?

भगवान - प्रेम से जी लो, एक ही जिन्दगी है। न आत्मा है और न ही दूर कही मोक्ष है।

योद्धाः - क्या कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर के समय में धरती पर धर्म था?

भगवान - नही! धर्म धरती पर नही व्यक्ति में होता है। उन महापुरुषों में था। तुम तो तब भी ऐसे ही खाली थे।

योद्धाः - बुद्धजन संसारी लोगो की दृष्टि में पागल से क्यों प्रतीत होते हैं?

भगवान - जीते जी जिसके भ्रम टूट जाते है वो सांसारिक लोगो को पागल से ही प्रतीत होते है।

योद्धाः - क्या प्रबुद्धजनों की मृत्यु होती है ?

भगवान - हाँ! लेकिन जीते जी ही हो जाती है। 70 से 80 वर्ष के बाद तो देह जाती है।

योद्धाः - कैसे ज्ञात होगा कि सत्य मिल गया है?

भगवान - जब तुम्हारा घट फूट जाए।

योद्धाः - कौन सा शास्त्र ठीक है जिससे प्रज्ञा, बोध, जागरण आ जाए?

भगवान - प्रज्ञा, बोध, जागरण पुस्तको से कभी भी नही समझा जा सकता। तुम भी चलो! रुको मत कहीं भी। वो समय के साथ-साथ स्वत: ही आ जाएगा।

योद्धाः - क्या जिज्ञासा धर्म प्राप्ति का प्रथम चरण है?

भगवान - तुम्हारा मरना ही धर्म प्राप्ति का पहला और आखिरी चरण है।

योद्धाः - क्या जाति व्यवस्था ठीक है?

भगवान - हाँ ! गधा एक जाति का है और घोड़ा एक जाति का। तुम जानो तुम्हें कौन सी जाति पसन्द है।

योद्धाः - क्या मनुष्य अछूत होता है?

भगवान - हाँ ! जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित है उन्हें छूआ-छूत मानना चाहिए। क्योंकि इससे वो 12-15 प्रतिशत लोग जो दिमागी कोढ़ से ग्रसित है वो अगर बचे हुए 85 प्रतिशत को छूंएगे तो वो भी रोगी बन जाएगें।

योद्धाः - क्या कौआ हमारा पितर होता है?

भगवान - हाँ ! चिंता मत करो। तुम जब मरोगें तो कौऐं ही बनोगें क्योंकि पूरा जीवन तुमने धर्म के नाम पर अपने-अपने धर्म स्थलों में बैठकर काँव-काँव ही तो की है।

योद्धाः - क्या ज्योतिष विद्या गलत है?

भगवान - नही! बिल्कुल ठीक है। क्योंकि वो विद्या जिससे हमारे देश में कुछ बेरोजगार लोग पेट भरने में सक्ष्म है वो गलत कैसे हो सकती है। और तुम्हारें भविष्य के बारे में वो ज्योतिष विद्या बिल्कुल ऐसी ही है जैसे एक अंधा दूसरे अंधे को अंधेरी रात में रास्ता बताऐं।

योद्धाः - क्या काबा-काशी जाने से कोई लाभ नही होता है?

भगवान - होता है। तुम्हारी पिकनिक हो जाती है। लेकिन असल में तुम्हारे ही भीतर काबा-काशी है और वहीं जानें से लाभ होता है।

योद्धाः - हमारे देश में गरीबी कब समाप्त होगी?

भगवान - जब समाज में करोड़ों जिन्दा कृष्ण, बुद्ध, नानक, कबीर, मोहम्मद, जीसस और अम्बेडकर घूमेंगें।

योद्धाः - क्या दान, दक्षिणा से कुद्ध लाभ होता है?

भगवान - नही! अगर तुम दान दक्षिणा के बदले अपने पापों का सौदा करना चाहते हो तो यह मुमकिन नही है। हाँ ! यही काम अगर तुम समाज सेवा करके लोगों को शिक्षित और उनका जीवन उत्तम करने को करते हो तो यह परमात्मा यानी जीवन की ही सेवा है। अच्छा कृत्य है लेकिन धर्म का कुछ भी लेना-देना नही है क्योंकि धर्म को लेना देना केवल मनुष्य से होता है।

योद्धाः - क्या धन का दान देने से खुदा प्रसन्न होता है?

भगवान - जिस धन को मनुष्यों ने बनाया और तुम्हारें मूढ़ महात्माओं ने जिसकी हमेशा निंदा ही की है वो निंदनीय वस्तु से भगवान प्रसन्न ही कैसे होगा?

योद्धाः - मन्दिर-मस्जिद आदि बनाना क्या धर्म का कार्य नही होता?

भगवान - बिरला ने भारत में अनेको मन्दिर बनाए, अम्बेड़कर ने लोगो को विद्या के मन्दिर में जाने को प्रेरित किया, टाटा और धीरु भाई ने देश के लिए धन का सृजन किया। स्वयं अपनी बुद्धि से निर्णय करो कि कौन सा कार्य धर्म का है।

योद्धाः - मरते समय राम नाम या गंगा जल का क्या लाभ?

भगवान - जो व्यक्ति पूरा जीवन बंधन में रहा तुम सोचते हो मरते वक्त राम नाम से या गंगा जल की 2 बूंद से कोई लाभ होगा? लाभ जीवन में चाहिए था कि मुक्त जी पाता। लेकिन वो तो बंधा रहा अपनी ही परम्पराओं से विचारधाराओं से। मरने के बाद मुक्ति की धारणा बुद्धों की नही बुद्धूओं की सोच है।

योद्धाः - क्या समाज में अम्बेड़कर के मन्दिर बनाने से समाज सुधरेगा?

भगवान - नही। तुम समाज में जिन्दा 5 करोड़ अम्बेड़कर पैदा कर दो समाज तत्क्षण सुधर जाएगा।

योद्धाः - क्या मनु संहिता के अनुसार चलना ठीक नही है?

भगवान - नही ! बिल्कुल ही गलत है। पहले का समाज बहुत ही मंद बुद्धि समाज था उस समय लोगों को भी चाबुक के सहारे ठीक रखा जाने का प्रयास किया जाता रहा होगा। लेकिन आज समाज का बौद्धिक स्तर बहुत ऊंचा है। आज उसी स्तर से लोगों को हाँकना बिल्कुल ही गलत होगा।

योद्धाः - ब्राहम्ण ही ऊंच-नीच क्यों मानते है, छूआ-छूत क्यों मानते है?

भगवान - ऊंच-नीच या छुआ-छूत को मानने वाला व्यक्ति ही स्वयं को ब्राह्मण वाद की परम्परा में घोषित कर देता है। हर धर्म में ऐसे लोग मिल जाएगे जो स्वयं को उच्च तथा दूसरो को निम्न मानते है। वो सभी एक पुरानी परम्परा को जिन्दा रखना चाहते है और उसी सड़ी-गली लाश का नाम है ब्राह्मण वाद। इसको किसी जाति विशेष से नही जोड़ना चाहिए।

योद्धाः - क्या राम राज दुबारा लाया जाना चाहिए?

भगवान - नही ! तुम्हें ज्ञात भी है कि राम राज में क्या व्यवस्थाएं थी। स्त्रीयां-पुरुष गुलामो की तरह बाजारों में बिकते थे, स्त्रियों का शोषण होता था। चारो तरफ का समाज ऊंच-नीच के वर्गीकरण में विभाजित था। इस प्रकार का राम राज हमारे देश के माथे पर एक ध्ब्बा ही लगाएगा।

योद्धाः - क्या गरीब-अमीर प्रारब्ध के कर्मो के कारण बनता है?

भगवान - नही! यहा कभी कोई भी वस्तु दुबारा नही होती। एक पत्ता भी दुबारा नही होता तो मनुष्य कहाँ से दोबारा होगा।

योद्धाः - इस जगत का असली मालिक कौन? खुदा या भगवान?

भगवान - तुम।

योद्धाः - भारत धर्म प्रधान देश है फिर भी गरीब क्यों?

भगवान - क्योंकि तुम सभी के तथाकथित धर्मो की बागडोर भूखे, नंगे, भिखमंगे धर्मगुरुओं ने छीन ली है। और उन्होंने धर्म की परिभाषा ही बदल दी है। अगर आज भी हमने धर्म का सही अर्थ न समझा तो इस देश का भविष्य हमेशा ही अंधकार में रहेगा।

योद्धाः - भारत का इतिहास ५५०० वर्ष पुराना फिर भी भारत पिछड़ा क्यों?

भगवान - क्योंकि भारत की छाती पर अज्ञानता ने कब्जा कर लिया है। भारत ने सोच पाली हुई है कि अमीर-गरीब प्रारब्ध कर्मो के कारण होता है जो कि पूर्णतया गलत है। जब तक तुम अपना भविष्य अपने हाथ में नही लोगे तब तक भारत गरीब और पिछड़ा ही रहेगा।

योद्धाः - क्या हम यहा सुख पैदा कर सकते है?

भगवान - हाँ ! जब तुम दु:ख पैदा कर सकते हो तो सुख क्यों नही।

योद्धाः – क्या जन्म-मृत्यु पूर्व निर्धारित है?

भगवान - शायद तुम्हारे लिए तो हाँ। और जिन्हें सत्य मिल गया उनके लिए कदापि नही।

योद्धाः – क्या मरने के बाद हमें स्वर्ग मिलेगा ?

भगवान - जिसे आज जीना आ गया वो कभी भविष्य के लिए सपने नही बुनता।

योद्धाः – मौत से बचने के लिए कौन सा मंत्र है?

भगवान - इससे पहले मौत आए तुम मेरे पिलाए अमृत का स्वाद चख लो मृत्यु तुम्हारा बाल भी बाँका नही कर पाएगी।

योद्धाः – हम देश के लिए, धर्म के लिए क्या करे?

भगवान - अभी भी वक्त है उठ खड़े हो जाओ। अपनी आवाज इतनी बुलंद कर दो कि वो तुम तक पहुँच जाये।

योद्धाः – क्या धर्म की रक्षा के लिए हथियार उठाना ठीक है ?

भगवान - नही! इंसान को मार कर धर्म की रक्षा करने से अच्छा है धर्म को मारकर इंसान की रक्षा कर ली जाये।

योद्धाः – गुरु कौन सा सही है?

भगवान - पूरा अस्तित्व ही गुरु है तुम बस शिष्य बनने को तैयार हो जाओ।

योद्धाः – क्या धर्म युद्ध में जान देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है?

भगवान - यह किसी मूढ़ व्यक्ति के वचन है। कोई भी व्यक्ति अगर अपने धर्म का तो उत्थान चाहता है और दूसरे के धर्म का विनाश चाहता है तो वह व्यक्ति धार्मिक हो ही नहीं सकता।

योद्धाः – धर्म किस उम्र में सीखना सही है?

भगवान - मनुष्य को पहले पेट भरने योग्य बनाओ। जब उसका पेट भर जाएगा तो वह स्वयं ही तुम्हारे पास आ जाएगा धर्म की खोज करने।

योद्धाः – हमारा देश कब उन्नत होगा ?

भगवान - जब देश में युवा पैदा होगा और उठ कर एक क्रांति को जन्म देगा।

योद्धाः – मृत्यु के क्षण में क्या भगवान के नाम सिमरन से कुछ लाभ होता है?

भगवान - नहीं। इस प्रकार जीवन जियो कि मृत्यु के क्षण में यह कह सको कि "मजा आ गया जीवन जीनें का"। हो सके तो ये जीवन हमे पुन: पुन: देना मैं इसे बार बार जीना चाहूंगा।

योद्धाः – भारत अमीर कैसे होगा ?

भगवान - कसम खा लो कि जिंदगी को भाग्य के भरोसे न छोड़ेगे। बस यही सूक्त है भारत के और तुम्हारे अमीर होने का।

योद्धाः – हम अज्ञान से कैसे मुक्त होंगे ?

भगवान - तुम्हें अज्ञान से नही, तुम्हारे मूढ़ता भरे ज्ञान से मुक्त होना है जिसको आज तक तुम ज्ञान मानते आए हो, उससे मुक्त हो जाओ।

योद्धाः – हमें यह अनुभव कैसे हो कि जीवन ही खुदा है?

भगवान - 10-20 दिन रोज एक घंटा श्मशान में जाकर बैठो। विपरीत में ही वास्तविक स्थिति का अनुभव होता है।